International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 105-106

वेदों में नारी की सार्वभौमिकता

सोनू

Extension lecturer, Department of Hindi, Ch. Bansi Lal Govt. College, Loharu, Bhiwani, Haryana, India

सरांश
मानव समाज में नारी को 'मातृ' रूप सर्वदा प्रतिष्ठित रहा है माता का सहज वात्सल्य, प्रेम, त्याग और साहस उत्सर्ग की उत्कट भावना पर आश्रित रहता है । इन मातृ रूपों में – नारी सुलभ, प्रेम, दया, ममता, धैर्य और साहस के अतिरिक्त संयम आदि गुण दृष्टव्य हैं। साथ ही विमाता और कुमाता के रूप में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि दुष्ट प्रवृत्तियां भी प्रदर्शित की गयी है

मूल शब्द: मानव समाज, मातृ, नारी सुलभ, प्रेम, दया, ममता।

प्रस्तावना
वैदिक काल के काव्यों में नारी की प्रशंसा की गयी है और कहा गया है कि नारी तु 'नारायणी ' । नारी के लिए कहा गया है कि –"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता"।
वैदिक काल से जहां पर नारियों की पूजा की जाती है वहां पर देवता भी निवास करते है। नारी को सुन्दरी या प्रधान पात्री कहते हैं। हमारे नाटय्शास्त्र में नारी को–नायिका के अनेक भेदों की कल्पना की साथ ही उनकी शास्त्रीय एवं व्यवस्थित रूप भी प्रदान किया गया है। भरत ने प्रकृति के विचार से नायिका के तीन भेद बतायें गयें हैं।–

सर्वासामेव नारीणां त्रिविधा प्रकृतिः स्मृता।
उत्तमा, मध्यमा चैव तृतीया चाधामा स्मृता।। (1)
गुण के आधार पर नायिका के चार भेद माने गये हैं–
1. दिव्या
2. नृपपत्नी
3. कुलस्त्री
4. गणिका

आचार्य रूद्रट ने नायिका के 384 भेद माने हैं।
आचार्यो ने नारी के 8 रूप बताये हैं–
1. वासक सज्जा
2. विरहोत्कण्ठिता
3. स्वाधीन भतृका
4. कलहान्तिरिता
5. खण्डिता
6. विप्रलब्धा
7. प्रेषित भतृका
8. अभिसारिका

ये भेद परवर्ती वैदिक आचार्यो को इसी रूप में मान्य है।
नारी की कथा वस्तु के आधार पर पाँच भेद माने गये हैं।
1. नायिका
2. प्रतिनायिका
3. उपनायिका
4. अन्यनायिका
5. नायिकाभास आदि

नारी के स्वरूप की सार्वभौमिकता :–
मानव समाज में नारी को 'मातृ' रूप सर्वदा प्रतिष्ठित रहा है माता का सहज वात्सल्य, प्रेम, त्याग और साहस उत्सर्ग की उत्कट भावना पर आश्रित रहता है । इन मातृ रूपों में – नारी सुलभ , प्रेम, दया , ममता , धैर्य और साहस के अतिरिक्त संयम आदि गुण दृष्टव्य हैं। साथ ही विमाता और कुमाता के रूप में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि दुष्ट प्रवृत्तियां भी प्रदर्शित की गयी है–

हमारे वैदिक कालिन समाज में माता के तीन रूप दिखायी देते हैं–
1. सुमाता ।
2. कुमाता ।
3. विमाता ।

इन तीनों रूपों का वैदिक लोक साहित्य में वर्णन मिलता है।
हमारे वैदिक कालिन समाज में धर्मप्रधान मानने वाली नारियां रहती थी। यथा–पिंगलिका, रूपशिखा, श्रृंगभुज की माता गुणवरा और सीता इत्यादि ।
पिंगलिका अग्निदत्त नामक ब्राह्मण की कुलिन दृढ, निष्ठा, उज्जवला चरित्र सम्पन्न स्त्री थी। रूपशिखा अपने पति श्रृंगभुज को अपने राक्षस पिता से बडी चतुराई से रक्षा करती हैं और अपने जन्म दाता पिता के साथ अपने पति के कारण छल करने से भी नही घबराती ।
श्रृंगभुज की माता –गुणवरा ने रूपशिखा की प्रशंसा इस प्रकार से की –

हित्वा स्वजीवितं बन्धून देशं चेह यदेतया ।
त्रीण्येतानि प्रदन्तानि तुम्यं चित्रचरित्रया।। (2)

लोक निन्दा के भय से श्री राम ने अपनी प्रिय पत्नी सीता का परित्याग कर दिया गर्व के कारण खिन्न सीता ने वाल्मीकि के आश्रम में शरण ली अन्त में राम ने सीता को बुलाकर उनको स्वीकारा।

नारी का क्षेत्र :–
नारी का प्रमुख कार्यक्षेत्र गृह ही होता है इस लिए उसको गृहस्वामिनी अथवा गृहणी की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। नारी गृहशोभा होती है। उसी से घर स्वर्ग की भाँति सुखद,

आनन्दमय, उल्लासयुक्त, शान्तिमय और प्रसन्नता का केन्द्र कहलाता है। घर में नारी की निश्चय ही महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। घर में स्त्री के लिए अनन्त कार्य होते है। वह प्रेम , सेवा , त्याग , धैर्य , तत्परता , और परिश्रम से सभी कार्यो को सम्पन्न करती है व परिवार में महिलाओं का भोजन बनाना , सन्तान का स्नेहपूर्वक लालन –पालन करना उनकों स्नाद आदि कराना तथा स्निग्ध आहार खिलाकर प्रेम के साथ उन्हें गोद में खिलाने आदि का कार्य किया करती थी।

यथा– सादरं स्नपयित्वां च दत्वा स्निग्धं च भोजनम् ।
कृत्योत्संडे च प्रपच्छ सा तं बालविनष्टकम ।। (3)

गृहस्थ महिलायें यज्ञआदि शुभ कर्म करती हुई गृहणी का पद प्राप्त करती थी। उनकी यह प्रबल धारणा थी कि देवताओं और ब्राह्मणों की पूजा सज्जनों के लिए 'कामधेनु' के समान है। उससे क्या प्राप्त नही होता है। यथा–

देवद्विजसपर्या हि कामधेनुर्मता सताम्।
किं हि न प्राप्पते तस्याः शेषाः सामादिवर्णनाः।।
दुष्कृतं त्वयि दिव्यानामत्युच्चपदं जन्मनाम्।
प्रवातमिव पुष्पाणामधः पातैक कारणम्।। (4)

इस प्रकार तत्तकालिन हमारे वैदिक समाज में कुलिन स्त्रीयां घर के दैनिक कार्यो, अतिथि सेवा , सत्यकर्मो और विविध प्रकार के पुण्य कर्मो को गृहस्थ धर्म अथवा अपना कर्तव्य मानती थी। गृह कार्यो में ही तत्पर रहना जीवन का परम लक्ष्य समझती थी। गृहस्थ धर्म में निर्धन , दरिद्र जनों की सेवा करना तथा उनकों वस्त्रादि देकर स्वादिष्ट भोजन कराना शुभ कर्म माने जाते थे। स्त्रियां संगीत के अतिरिक्त कृतिम वेशधारण करने और पुरषोचित साहस आदि का प्रदर्शन करते हुए आने सतीत्व की रक्षा करने में सक्षम होती थी इसी प्रकार स्त्रियां माला बनाने में, विविध प्रकार के श्रृंगार , प्रसाधन करने तथा तिलक रचना आदि कलाओं में निपुण हुआ करती थी। वाक्पटुता अथवा वार्तालाप , कौशल नारी का प्रमुख गुण माना जाता था।

निष्कर्ष :–अन्त में हम निष्कर्ष रूप में कह सकते है। कि वैदिक शास्त्र में नारियों का मुख्य कार्यक्षेत्र घर ही है जिसकों वह अत्यन्त , सजगता व कार्यकुशलता से प्रतिपादित करती थीं।

सन्दर्भ सूची :–

1. दसरूपक , 2–99
2. नाटय्दर्पण , 4 सूक्त 288
3. साहित्यदर्पण , 3 , 129 –130
4. कथासरित्सागर पृष्ठ – 485
5. कथासरित्सागर पृष्ठ 294 , 415
6. कथासरित्सागर पृष्ठ 691
7. वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास –पं0 बलदेव उपाध्याय
8. कथासरित्सागर , पृष्ठ 128 , 295